

DR. PHILIPOSE MAR CHRYSOSTOM
MAR THOMA VALIYA METROPOLITAN

Dr. Philipose Mar Chrysostom Mar Thoma Valiya Metropolitan is the senior most bishop of the Malankara Mar Thoma Syrian Church. Mar Chrysostom is widely recognized for his spiritual serenity and relentless commitment to the society. True to his name Chrysostom which means 'Golden Tongued', he is indeed a champion of oration. His superb thoughts coupled with hilarious articulation enviably endear him to everyone. Apart from being a spiritual leader, he is a dynamic facilitator, voracious reader and a valiant prophet of justice and love. He respects diversity of opinions and is open to new ideas but uncompromising on principles for a noble life.

2. Born on April 27, 1918 as the son of Vicar General Very Rev. K. E. Oommen, he graduated from the Union Christian College of Aluva, Kerala. The strong christian nurture at home and his proclivity for the Gandhian ideals motivated him to join the Mar Thoma Ashram at Ankola, Karnataka in 1940 where he thoroughly identified with the people of that rural society for the betterment of their living conditions. He received theological education at the United Theological College, Bangalore and the St Augustine's College, Canterbury. He became an ordained minister of the Mar Thoma Church in 1944 and was consecrated as Bishop in 1953. He became the Suffragan Metropolitan in 1978 and the Metropolitan (Supreme head) of the church in 1999. On the 2nd of October, 2007 he relinquished his position and became the Valiya Metropolitan (Metropolitan Emeritus) of the church.

3. Philipose Mar Chrysostom was the President of the National Council of Churches in India (NCCI) and attended the General Assembly of the World Council of Churches (WCC) at Evanston in 1954 and at Uppsala, Sweden in 1968. He was an invitee to the 2nd Vatican Council in Rome and made valuable contributions to the ecumenical movement. At home, he was the President of various organizations of the church as well as the Governing Councils of many educational institutions where he exhibited his administrative acumen and far sightedness. On the 8th of August, 2007 he became the longest serving bishop of any christian church in India.

4. Many unprecedented social interventions were initiated by him which was authentic efforts to alleviate the pain of the suffering in our society. In commemoration of his 'Navathi' (90th birthday) a 'House for the Houseless' project was launched and houses were provided to close to 3000 families, in one year, irrespective of any differences. Their need alone was the criterion in the distribution of houses in this scheme. Projects for children in slums, especially orphans, to provide shelter, education and self-employment skills were started which eventually became a source of strength and solace for many. In 1986 when 18 orphan boys were vacated from their shelter homes, he took them in and provided accommodation at his own residence. Later he rehabilitated them all with a job, family and house. He voluntarily joined hands with the state governments in their various programmes for the improvement of the life of the poor and the down trodden.

5. Mar Chrysostom is a living model in the Kerala society in terms of his views about religious and cultural harmony in the land. He commands respect from all not only as a Christian spiritual leader but also as a genuine fellow human in life's pilgrimage. He makes efforts to meet with leaders of other religious persuasions and that brings about the message that religious differences are not divisions but enrichment of human life.

6. Mar Chrysostom is the recipient of numerous honours, both from the spiritual and secular arenas. More than 40 books have been published on him by a variety of authors.

7. His Grace Dr. Philipose Mar Chrysostom is undoubtedly a divine blessing to the world. His life, spannings century, is an open book for all to derive inspiration, inner power and enlightenment.



डॉ. फिलीपोस मार क्रिसोस्टम मार थोमा वलिया मेट्रोपोलिटन

डॉ. फिलीपोस मार क्रिसोस्टम मार थोमा वालिया मेट्रोपोलिटन मलंकारा मार थॉमस सीरियन चर्च के वरिष्ठतम बिशप हैं। आप अपनी आध्यात्मिक शुद्धता तथा समाज के प्रति अनवरत प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं। आपमें यथा नाम तथा गुण हैं जैसा कि क्रिइसोस्टम का अर्थ होता है 'स्वर्ण जिह्वा, आप वास्तविक भाषण कला में पारंगत हें। आपके उत्तम विचारों को उल्लसित अभिव्यक्ति से प्रकट करने की कला प्रत्येक जन द्वारा आपको स्पृणीय रूप से प्रिय बनाती है। आप आध्यात्मिक मार्गदर्शक होने के अतिरिक्त एक उर्जस्वी अनुदेशक, जिज्ञासु पाठक तथा न्याय और प्रेम के पराक्रमी प्रॉफेट हैं। आप विचारों की विविधता का सम्मान करते हैं और नए विचारों का स्वागत करते हैं किंतु, आदर्श जीवन के सिद्धांतों के साथ कोई समझौता नहीं करते हैं।

2. आपका जन्म बिशप प्रमुख माननीय के. ई ओमेन के घर में 27 अप्रैल, 1918 को हुआ। आपने यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज ऑफ अलुवा, केरल से शिक्षा प्राप्त की। घर में ईसाई परवरिश तथा गांधी जी की विचारधारा की ओर आपके झुकाव ने आपको 1940 में मार थोमा आश्रम, अंकोला, कर्नाटक के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया जहां आपने उस ग्रामीण समाज के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए उनके साथ बखूबी समन्वय किया। आपने यूनाइटेड थिओलॉजिकल कॉलेज, बंगलूरू तथा सेट ऑग्स्टीन कॉलेज केंटरबरी से आध्यात्म की शिक्षा ग्रहण की। 1944 में आप मार थोमा चर्च के विधिवत पादरी बने तथा 1953 में आपको बिशप के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। आप 1978 में सहायक मेट्रोपॉलिटन बने ओर 1999 में चर्च के मेट्रोपॉलिटन (सर्वोच्च अध्यक्ष) बने। 2 अक्तूबर, 2007 में आपने अपना पद त्याग दिया और चर्च के वालिया मेट्रोपॉलिटन (सेवानिवृत्त मेट्रोपॉलिटन) बन गए।

3. आप भारत में चर्चों की राष्ट्रीय परिष्द (एन सी सी आई) के अध्यक्ष रहे और आपने 1954 में इवानस्टोन में तथा 1968 में उपसाला, स्वीडन में चर्चों की विश्व परिषद (डब्ल्यूसीसी) की आम सभा में भाग लिया। आपको रोम में दूसरी वैटिकन परिषद के लिए आमंत्रित किया गया और आपने गिरजाघरो के सम्मेलनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने देश में, आप चर्च की विभिन्न संस्थाओं के अध्यक्ष रहे साथ ही कई शैक्षिक संस्थाओं की परिषदों के संचालक रहे जहां आपने अपनी प्रशासनिक कुशाग्रता और दूरदर्शिता का परिचय दिया। 8 अगस्त 2007 को आप भारत के किसी चर्च के सबसे लंबे कार्यकाल के बिशप बने।

4. कई बेमिसाल सामाजिक प्रयासों का आगाज आपके द्वारा किया गया जो कि हमारे समाज की यंत्रणाओं की पीड़ा को कम करने के लिए वास्तविक प्रयास थे। आपकी 'नवथी' सालगिरह (90 वां जन्मदिन) के आयोजन पर 'बेघरों के लिए घर' परियोजना आरंभ की गई और बिना किसी भेदभाव के लगभग 3000 परिवारों को घर प्रदान किए गए। इस योजना में लोगों की घर की आवश्यकता ही घरों के वितरण के लिए एकमात्र मानदंड था। झुग्गी झोंपड़ी में रहने वाले बच्चों खासतौर से अनाथ बच्चों को आसरा प्रदान करने, शिक्षा और स्व-रोजगार कौशल विकसित करने के लिए परियोजनाएं आरंभ की गई जो कि धीरे-धीरे कई लोगों के लिए शक्ति और ढाढस का स्रोत बनी। 1986 में जब 18 अनाथ लड़कों को उनके आश्रय गृहों से निकाल दिया गया तब आप उन्हें अपने साथ लाए और उन्हें अपने ही घर में रखा। बाद में आपने उन सभी को नौकरी, परिवार और घर दिलाकर उनको नया जीवन दिया। आपने गरीबों तथा उपेक्षित वर्ग के जीवन को बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकारों के विभिन्न कार्यक्रमों में स्वेच्छा से भागीदारी की।

5. आप धर्म के प्रति अपने विचारों तथा केरल में सांस्कृतिक सौहार्द बनाए रखने के लिए केरल के समाज में जीवित आदर्श माने जाते हैं न केवल ईसाई धार्मिक नेता के रूप में बल्कि एक खरे व्यक्ति के रूप से जीवन यात्रा करने के लिए आपको सभी से सम्मान प्राप्त हुआ है आपने अन्य धार्मिक मतों के नेताओं से मिलने के प्रयास किए जिससे यह संदेश मिलता है कि धार्मिक विभिन्नताएं विभक्त करने के लिए नहीं अपितु मानव जीवन के संवर्धन के लिए हैं।

6. आपको धार्मिक तथा सांसारिक दोनों क्षेत्रों से कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपके ऊपर, विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई 40 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

7. आप नि:संदेह ही विश्व के लिए ईश्वर की एक दिव्य देन हैं। आपका जीवन, पूर्ण शताब्दी एक खुली किताब है जिससे दूसरे प्रेरणा, आंतरिक शक्ति, ज्ञानोदय प्राप्त कर सकते हैं।